⑦ प्रश्न :- सिन्धुसभ्यता के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक कारणों का वर्णन करें।

उत्तर :- विश्व की प्राचीन नदी घाटी की सभ्यता में सिन्धुघाटी की सभ्यता का अपना एक विशिष्ट स्थान है। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक चरम तक इस सभ्यता की जानकारी लोग का नहीं थी लेकिन इस सभ्यता के प्रकाश में आते ही एक पूर्ण विकसित नागरिक सभ्यता का उदय हुआ जिससे सिन्धुघाटी के सभ्यता के नाम से जानते हैं।

① **आर्थिक कारण** – सिन्धुघाटी सभ्यता का आर्थिक जीवन कृषि पशुपालन एवं विभिन्न प्रकार के उद्योग पर आधारित था वैसे भी प्राचीन काल का सिन्धप्रदेश आज के सी सिन्धप्रदेश से काफी उरबर था क्योंकि उस समय का जीवन प्रकृति पर ही आधारित होता था। ~~जीवन को~~ जमीन को हलों की सहायता से जोता जाता था। और संभवत यह हल लकड़ी के बने होते थे। यही कारण है कि सिन्धुघाटी के लोग विभिन्न प्रकार के अन्न, फल, शबजी उपजाया करते थे। वैसे हमें कपास की खेती का भी प्रमाण मिलता है। उस समय बहुत ज्यादे अनाज हो जाता था तो ~~सिपाक~~ कृषक लोग बड़े बड़े गढ्ढ खोदकर अनाज उसमें सुरक्षित रखते थे। लेकिन कृषि के साथ-साथ पशुपालन पर भी बहुत अधिक ध्यान देते थे, पशुओं से दूध, मास ऊन इत्यादि

जा सकता है। हड़प्पा मोहन जोदड़ो लोथल, रवपड़ आदि प्रागैतिहासिक संस्थानों के इतिहास का निश्चय पुरातात्विक उत्खनन से ही संभव हो सका है। इसीप्रकार पाटलीपुत्र, वैशाली, चम्पा नालंदा, मथुरा, कौशाम्बी हस्तिनापुर इत्यादि स्थलों की खुदाईयाँ एवं उससे प्राप्त मिट्टी के बर्तनों, ईंटों का प्रयोग, धातु, पत्थर इत्यादि समानों के आधार पर निश्चित समय में प्रचलित सभ्यता का पता आसानी से लगाया जा सकता है।

सिक्कों से भी भारतीय इतिहास लेखन में सहायता मिलती है। ऐसे सिक्कों का छठी शताब्दी ई० पू० से आरंभ हुआ। यूनानियों के आगमन के साथ ही सिक्कों के स्वरूप में परिवर्तन आया। अब इस पर राजाओं के नाम एवं उसके उपाधियों को भी उत्कीर्ण किया जाने लगा इसके साथ ही शासकों की धार्मिक भावनाओं तथा उनकी व्यक्तिगत अभिरूचियों को भी सिक्कों पर ही जारी किये जाने लगे। इसके साथ ही अनेक रोमन सिक्के भी भारत में पाये गये हैं।

~~प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोतों के रूप में विभिन्न~~

प्राचीन स्मारकों से भी इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता मिलती है। प्राचीन भवनों, मंदिरों के अवशेष इत्यादि के आधार पर किसी युग विशेष की संस्कृति एवं कला का पता आसानी से लगाया जा सकता है। हड़प्पा मोहनजोदड़ो इत्यादि स्थान के प्राप्त

Scanned with CamScanner

भवनों के अवशेष के आधार पर नगर निर्माण शैली का अंदाज मिलता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोतों के रूप में विभिन्न साहित्यिक ग्रंथों का अपना अलग ही महत्व है। उपलब्ध साहित्य जो भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता प्रदान करते हैं। उन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है :- देशी साहित्य और (b) विदेशी साहित्य। भारत के इतिहास में सबसे अधिक प्रकाश देशी साहित्य से ही पड़ता है। देशी साहित्य की संख्या बहुत बड़ी है। इसमें धार्मिक ग्रंथ, ऐतिहासिक ग्रंथ, महाकाव्य, नाटक आदि विभिन्न विषयों से सम्बद्ध ग्रंथ इत्यादि रखे जा सकते हैं। इन ग्रंथों से प्राचीन भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है। इसके साथ ही जैन और बौद्ध ग्रंथ, वेद, उपनिषद, आरण्यक आदि से भी हमें जानकारी प्राप्त होती है।

उपर्युक्त ब्राह्मण ग्रंथों के अतिरिक्त ऐसे अनेक ग्रंथ हैं जो धर्म प्रधान होते हुए भी राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। ऐसे ग्रंथों में सबसे प्रमुख रामायण और महाभारत आते हैं। रामायण में राम के रूप में एक आदर्श राजा की कहानी कही गयी है।

महाकाव्यों के अतिरिक्त पुराणों का वह स्थान आता है। प्राचीन भारत के समाजिक राजनीतिक और आर्थिक समाज की

डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS, Saharsa

जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें पुराणों का सहारा लेना पड़ता है। प्रमुख पुराणों की संख्या 18 है, जिनका नामांकरण विभिन्न देवताओं एवं जीवों के नाम पर किया गया है। ब्राह्मण धर्म ग्रंथ की तरह ही बौद्ध ग्रंथ भी इतिहास के पुनर्निर्माण में बहुमूल्य योगदान करते हैं। बौद्ध धर्मग्रंथ एक धर्म प्रधान साहित्य है जिससे प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व की अनेक बातें देखने को मिलती हैं।

विदेशी भी भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता प्रदान करते हैं सही स्थिति की जानकारी हमें विदेशी यात्रियों से मिलती है। ये यात्री निश्चित समय में भारत आये यहाँ की व्यवस्था को स्वयं देखा और उसका वर्णन किया। उसमें यूनानी, रोमन, तिब्बती एवं मुसलमान यात्रियों एवं लेखकों का विवरण महत्वपूर्ण है। भारत का विदेशों से बहुत पुराना संबंध रहा है। सिन्धु घाटी की सभ्यता के साथ ही भारतीयों ने विदेशी से संबंध स्थापित कर लिये थे।

चीनी एवं तिब्बती विवरणों से भी भारतीय इतिहास की जानकारी मिलती है। चीनी लेखक फाहियान जिसने 399 ई० में भारत आया था। और 15 वर्षों तक यहाँ रहा। इस दौरान भारत के प्रमुख बौद्ध विहारों का भ्रमण किया और चीन वापस लौटकर उसने अपनी यात्रा को लिपिबद्ध किया फाहियान के विवरण से भारत के

डॉ० अनुजा कुमारी (History) Pg-5
SNSRKS (Saharsa)

गुप्त कालिन इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की अच्छी जानकारी मिलती है। दूसरा प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग था 629 ई० में भारत आया इसी तरह इत्सिंग नामक चीनी यात्री सातवी शताब्दी में भारत आया था। इसके विवरण से विक्रमशीला और नालंदा की अच्छी जानकारी हमें प्राप्त होती है।

इस प्रकार, निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारत के इतिहास के अनुशीलन में मुसलमान लेखकों (जो प्रायः अरब और फारस के थे) से भी प्रयाप्त सहायता प्राप्त होता है। अलबेरूनी की तहकीका-अलहिन्द से हमें प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत की विशेष जानकारी मिलती है। उपर्युक्त सभी साधनों की सहायता से हमें प्राचीन भारतीय इतिहास का लेखन वैज्ञानिक ढंग पर कर सकते हैं। सभी प्राचीन साधनों का यथासंभव प्रयोग करने के बाद ही इतिहास का सही अध्ययन और मूल्यांकन हो सकता है। इतिहास धीरे धीरे विज्ञान की कोटि में आ रहा है, और वैज्ञानिक पद्धति को अपनाकर ही हम प्राचीन भारतीय इतिहास की गुत्थियों को सुलझा सकते हैं।

—x—

Scanned with CamScanner